जलवायु परिवर्तन एवं फसल स्वास्थ्य प्रबंधन पर 21 दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

पंतनगर। 27 फरवरी 2026। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित 21–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 'जलवायु परिवर्तन से फसलों में हो रही स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ तथा उनका प्रबंधन' विषय पर आयोजित किया गया, जिसका समापन समारोह पादप रोग विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय के आर. एस. सिंह सभागार में संपन्न हुआ।

समापन समारोह में विभागाध्यक्ष एवं निदेशक, उच्च संकाय प्रशिक्षण केंद्र, डा. योगेन्द्र सिंह ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की आख्या प्रस्तुत की एवं प्रशिक्षण के दौरान हुई गतिविधियों से अवगत कराया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अधिष्ठाता, कृषि डा. सुभाष चन्द्रा ने की। उन्होंने सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण–पत्र वितरित किए और कहा कि पादप रोगों में भूमिजनित पादप रोगों का महत्वपूर्ण स्थान है तथा भूमिजनित रोग कारकों का प्रबंधन अत्यंत कठिन कार्य है। उन्होंने पारिस्थितिकी संतुलन के महत्व पर बल देते हुए इसे भूमिजनित कारकों के प्रबंधन में आवश्यक बताया। साथ ही, जैविक नियंत्रकों को सिंचाई जल में मिश्रित कर बायोफर्टिगेशन प्रयोग करने की विधि को पॉलीहाउस में उगाई जाने वाली फसलों के लिए प्रभावी बताया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को भूमि–पारिस्थितिकी के सुधार के संबंध में गंभीरता से विचार करना होगा तथा अपने शोध को किसानों के खेतों तक पहुँचाने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। साथ ही, वैज्ञानिकों द्वारा किसानों के खेतों पर किए गए कार्यों को आँकड़ों के रूप में संकलित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

कार्यक्रम में देश के 8 राज्यों से 21 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। इनमें मध्य प्रदेश से डा. दिनेश कुमार, डा. कमल किशोर सैनी एवं बृजनन्दन सिंह तथा असम से डा. बन्दना सेकिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम को अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी बताया और पुनः विश्वविद्यालय आने की कामना व्यक्त की। कार्यक्रम के दौरान पादप रोग विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन शोध छात्रा कामाक्षी काण्डपाल ने किया तथा सह–समन्वयक डा. दीपशिखा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।